पञ्चशील-सिद्धान्ताः

सन्दर्भ-प्रस्तुत गद्यखण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'संस्कृत भाग'** के **'पञ्चशील-सिद्धान्ताः'** नामक पाठ से उद्धृत है।

- **पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्ताः।**
  पंचशील शिष्टाचार-सम्बन्धी सिद्धान्त हैं।
- **महात्मा गौतमबुद्धः एतान् पञ्चापि सिद्धान्तान् पञ्चशीलमिति नाम्ना स्वशिष्यान् शास्ति स्म।**
  महात्मा गौतम बुद्ध ने इन पाँच सिद्धान्तों का पंचशील के नाम से अपने शिष्यों को उपदेश दिया था।
- **अत एवायं शब्दः अधुनापि तथैव स्वीकृतः।**
  इसलिए यह शब्द अब भी वैसा ही स्वीकृत है।
- **इमे सिद्धान्ताः क्रमेण सन्ति- अहिंसा, सत्यम्, अस्तेयम्, अप्रमादः, ब्रह्मचर्यम् इति।**
  ये सिद्धान्त क्रमशः इस प्रकार हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), अप्रमाद (प्रमाद न करना) तथा ब्रह्मचर्य।
- **बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्।**
  बौद्ध-युग में ये सिद्धान्त व्यक्तिगत जीवन की उन्नति के लिए प्रयुक्त थे,
- **परमद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगकारणानि, विश्वबन्धुत्वस्य, विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति।**
  किन्तु आजकल ये सिद्धान्त राष्ट्रों की पारस्परिक मैत्री एवं सहयोग के आधार (तथा) विश्व-बन्धुत्व और विश्व-शान्ति के साधन हैं।
- **राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्यु एवाभवत्।**
  राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमन्त्रित्व-काल में चीन के साथ भारत की मैत्री पंचशील सिद्धान्तों के आधार पर ही हुई थी,
- **यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ।**
  क्योंकि दोनों ही देश बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे।
- **आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः।**
  आधुनिक विश्व में पंचशील सिद्धान्तों ने नया राजनीतिक स्वरूप ग्रहण किया है।
- **एवं च व्यवस्थिताः -**
  वे इस प्रकार व्यवस्थित (किये गये) हैं-
- **किमपि राष्ट्र कस्यचनान्यस्य राष्ट्रस्य आन्तरिकेषु विषयेषु कीदृशमपि व्याघातं न करिष्यति।।**
  कोई राष्ट्र किसी भी अन्य राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगा।
- **प्रत्येकराष्ट्र परस्परं प्रभुसत्तां प्रादेशिकीमखण्डताञ्च सम्मानयिष्यति।**
  प्रत्येक राष्ट्र परस्पर प्रभुसत्ता और प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान करेगा।
- **प्रत्येकराष्ट्र पुरस्परं समानतां व्यवहरिष्यति।।**
  प्रत्येक राष्ट्र परस्पर समानता का व्यवहार करेगा।
- **किमपि राष्ट्रमपरेण नाक्रंस्यते।**
  कोई भी राष्ट्र दूसरे (राष्ट्र) पर आक्रमण नहीं करेगा।
- **सर्वाण्यपि राष्ट्राणि मिथः स्वां स्वां प्रभुसत्तां शान्त्या रक्षिष्यन्ति।**
  सारे ही राष्ट्र परस्पर मिलकर अपनी-अपनी प्रभुसत्ता की शान्तिपूर्वक रक्षा करेंगे।
- **विश्वस्य यानि राष्ट्राणि शान्तिमिच्छन्ति, तानि इमान् नियमानङ्गीकृत्य परराष्ट्रस्सार्द्धं स्वमैत्रीभावं दृढ़ीकुर्वन्ति।**
  विश्व के जो राष्ट्र शान्ति चाहते हैं, वे इन नियमों को स्वीकार कर दूसरे राष्ट्र के साथ अपने मैत्रीभाव को दृढ़ करते हैं।

www.gyansindhuclasses.com
www.gyansindhuclasses.com